143 P
586
H

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
GOVERNMENT OF INDIA
NEW DELHI.

1180/1091

Call No.

Accession No. 586

GIPNLK—7/DAND—5-9-60—15,000

S/1911
891.431
Ar97N

वन्देमातरम्

निर्भय भजनावली

पहिला-भाग

गाने योग्य पवित्र भजन

रसियों की नई पुस्तक

प्रकाशक व संग्रहकर्त्ता

लाला नेमीचन्द्र आर्य्य

ग्राम बसैया जोतिराज, डा० किरावली, जि० आगरा।

मुद्रक—

देवेन्द्र शर्मा

आदर्श प्रेस, कसेरठ बाजार, आगरा।

प्रथमवार १०००] [मूल्य)॥ दो पैसा

586

निर्भय भजनावली

रसिया नं० १ ईश्वर प्रार्थना

दोहा—बहुत दिवश बीते हमें भोगत दुःख महान।
अब इस दुखिया देश की सुनि विनती भगवान॥

नैया डूबि चली भारत की फिर कब आओगे गोपाल ॥ टेक ॥
दुखी देवकी भारत माता पीड़ित हृदय विशाल।
पड़े चोट पर चोट टूटती है साहस की ढाल ॥१॥
आगि लगी है कुंजलतन में सूखे सरवर ताल।
वृन्दावन में खुले कवेले गऊ बछरा बेहाल ॥२॥
द्वापर में था दुखी सुदामा करि दिया उसे निहाल।
आजु सुदामा घर घर भूखे केशव न दयाल ॥३॥
फूट पूतना घर घर फैली धरे भेष विकराल।
भाई भाई का दुशमन है चलें कपट की चाल ॥४॥
स्वतंत्रता की मधुरी बंशी बजने दो नदलाल॥
छूटि जाय भारत के बन्धन वर्मा के भ्रम जाल ॥५॥

रसिया नं० २ घूंसखोर पटवारी

दोहा—तू कित में भूलौ फिरै झूठे गर्व गमार।
तेरे कुकर्म ही तुझे कर देंगे विसमार॥

तेरे कर्मन कौ मरोरा काऊ दिन लै बैठेगो तोय ॥टेक॥
तू तो जानें मौज उड़ाइ रहौ स्वारथ में भोय।
अरे हरामी तू तो अपनी रहौ आकबत खोय ॥१॥
काऊ सिकमी कौ खातौ बांधै असली कूँ दे खोय॥
बिन जोते की टीप करै जापै झूठी नालिश होय ॥२॥
मिलै तगाई जब तू मांगै फसलों नों हू ढोय।
कर मुल्की परचन हू पै अन्टी लेत टटोय ॥४॥
आपस में तू हमें लड़ाबे इतकी उतकी पोय।

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
NO. 586
Date 14-12-71
GOVT. OF INDIA

द्रूऊआर ते खाइ हरामी देइ बीज विष बोय ॥४॥
अफसर कूं खुश करिबे तेरी हांजू हांजू होय ।
झूटी पैदावारी लिख दे हम कूं धरि दे धोय ॥५॥
कलम कसाई जिह पटवारी दुनियां कहि रही रोय ॥
नमक हरामी मिलि कै मारें नैया देइं डुबोय ॥६॥
जितनी तेरी देखी करनी उतनी भोर रही खोय ।
शरौ काटि के तू दीनन कौ हात मलैगौ रोय ॥७॥
पहिले से अनजाने रहे नहिं सम्हरें (निर्भय) होय ॥
छोड़ि कायरी करें संगठन सीगु दिखाय दें तोय ॥८॥

रसिया नं० ३ असहयोग कौ तीर

खट शत्रु हृदय में हरदम भयौ असहयोग कौ तीर ॥टेक॥
कूद कूद कर अब तक खायौ यहां पर हलुआ खीर ।
मुँह अपनों सौ लेकर बैठे फूटि गई तक़दीर ॥१॥
डरा रहे हैं बार बार बो हमको दिखा २ शमशीर ।
चुप्पी साधें हम भी बैठे बने हुए वश वीर ॥०॥
लल्लो चप्पो की नहीं भाती अब हमको तकरीर ।
सत्य कह हम सत्याग्रही होंगे मीर मुनीर ॥३॥
ठूंस जेलमें दिये हजारों बेगुनाह दिया कलेजा चीर ।
भून दिये मासूम हजारों हो रह रह कर पीर ॥४॥
हालत सुनि जलियान वाले बाग की बहैं नैन से नीर ।
पड़ी लाश पर लाश तड़फती कौन बंधावे धीर ॥५॥
नंगे करिके बाजारों में पीटे सेठि अमीर ।
मारि २ कर बेंत फुलाये कोमल सकल शरीर ॥६॥
मौना व्रत क्यों होकर बैठे साधू रंक फकीर ।
असहयोग रण में आ कूदौ सुमरि पीर रघुवीर ॥७॥
जहां तक बनें जहां तक टालो पड़े अगर कुछ भीर ।
सब्रो शान्तीसे स्वराज्य लें यह कायम करो नजीर ॥
उल्टी सीधी खुपिया वाले भेजि रहे तहरीर ।
फसा बेगुनाह दिये हजारों हो रह २ कर पीर ॥६॥
राज कर्मचारी लख पड़ते हमको बहुत अधीर ।
शर्मा जलेसरी आ पहुँचा अब इनका आखीर ॥१०॥

रसिया नं० ४ असहयोग की घोर

घर २ कांपि रहौ सब लंदन सुनि २ असहयोग की घोर ॥ टेक॥
बनी बात सब अंग्रेजन की दई डायर ने बोर।
भारत में बस असहयोग का बढ़ा तभी से जोर॥१॥
करि करि सभा आज लन्दन में मचा रहे हैं शोर।
होमरूल जो आज मांगते जो थे कलत कठोर ॥२॥
जारी करें खूब भारत में कानून कठोर।
जेल भेजदो मार लगाओ करदो इनका भोर ॥ ३ ॥
भारत सब कौ ऐसौ प्यारौ ज्यों प्रिय चंद चकोर।
पंछी मीठी वानी बोलें दादुर कोयल मोर ॥ ४ ॥
डूब चुकी थी सब किश्ती चमक रही थी कोर।
मोहनदास सलहा ने खेंची असहयोग की डोर॥५॥
नौकरशाही हिन्दुस्तानी फिरतें मूंछ मरोर।
अपने रिश्तेदारों की खुदि खोदि रहे हैं गोर ॥ ६ ॥
आगा पीछा नहीं देखते कुछ ऐसे आखोर।
उलट गया राज पाट फिर लगे खाक बटोर ॥ ७ ॥
दिन में बंदर डाका डालें और राति में चोर।
बेईमान खुदगर्जी बढ़ के हैं दोनों आखोर ॥ ८ ॥
मुंह से लगा हराम हरामी बनका फिरें चटोर।
होश उड़ि रहे हैं पापिन के सुनि असहयोग हंकोर॥
कष्ट दे रहे तरह तरह के लगा लगा कर जोर।
शर्मा जलेसरी आपहुँचा अन्यायीन का ओर ॥१०॥

रसिया नं० ५ वार करो बेखटके

तुम वार करो बेखटके हम खूब लड़ेंगे डटके ॥ टेक ॥
है सोगंध दुशमनो रण से मति पीछें हटिके जाना।
हाथ दिखाओ बहादुरी के जो कुछ रखते हो बाना ॥
साथी सभी बुलालो अपने जो हों भूले भटके ॥ १ ॥
तोप चलालो बम बरसालो बन्दूकें भी चटकालो।
तेग तीर तलवार सिरोही और दुधारे खटकालो ॥
खोलौ सब अरमान दिलों के आज न जाना हटके ॥ २ ॥

है अपना सिद्धान्त अटल यह जीव अमर नहिं मरता है।
कर्मों के अनुसार देह यह नवीन धारण करता है ॥
गीता का अध्याय दूसरा देखो सफा पलट के ॥ ३ ॥
हमें नहीं दरकार हाथ में अब हथियार पकड़ने की।
है तरकीब निकाली हमने अजब निराली लड़ने की ॥
नहिं काम हिंसा का करते जे हैं असहयोग के लटके ॥४॥
पाला पड़ा आज मर्दों में सब बादी छटि जावेगी।
गली ढूढ़ने से छिपने की अब हर्गिज नहीं पावेगी ॥
इस मैदान जंग में वीरो आ जावो छट छट के ॥ ५ ॥
शुरू जंग में इरविन थकि गये अब कोई और बुलाओ जी।
युद्ध निहत्थों से करने की कोई तरकीब लड़ाओजी ॥
इन्द्र न तब भी घबड़ायेंगे चाहे शीश गिरें कट कट के ॥६॥

रसीया नं० ६ ॥ नमक का गोला ॥

नमक का गोला सात समुन्दर पार ॥ टेक ॥
ऐसे रस्ते गया पड़ी ना कोई रुकावट रस्ते में ॥
नये नये क़ानूनों के सब एकृ बंधे रहे बस्ते में ॥
अगिलों के लिये तेज पड़े पिछलों के लिये सस्ते में ॥
अजब रंग का है यह गोला,रुकता नहीं रोते में ना हँसते में ॥
प्राण अपान बायु आदि का है यही आधार ॥ १॥ नमक ॥
सच पूछो तो इस सैना पर ना गोली ना गोला है।
सिर्फ गान्धी टोपी ओढ़ें कंधे ऊपर झोला है ॥
कहीं मांसे कहीं दो मांसे कहीं तोला दो तोला है।
सात समुन्दर पार पै स्टाक नमक का खोला है ॥
इसी से गवर्नमेंट का सब बस है बेकार ॥ २ ॥ नमक ॥
ना बल्लम ना बरछी वांधे ना बन्दूक दुनाली की।
संग में बूढ़ा जनरल गांधी फौज बनाई कालों की ॥
लगते ही गोला गोलमेज में लाली उड़िगई लालों की।
सबरी ऐंठ और अकड़ निकल गई जी हुजूर जंजालों की ॥
मारे फिरें कप्तान कलक्टर कहीं पै थानेदार ॥ ३ ॥ नमक ॥

मूर्ख लोग मुश्किल से समझें चतुरों को साफ इसारा है।
समझ गये होंगे सब कोई जो मनतव्य हमारा है॥
डूबते हुवे लार्ड इरबिन ने तिनके का लिया सहारा है।
नोटिश और अखबार बंद हैं बिलकुल यही नजारा है॥
तेजसिंह कम ठहरैगा बहुत बड़ा बिस्तार॥ ४॥ नमक॥

रसिया नं० ७ ॥ किसानों की लूट ॥

भारी भीड़ पड़ी भगवान कैसे अपने प्राण बचावें।
सहते सीत घाम अरु मेह + हर दम हर से रखते नेह॥
सारी सूख गई है देह + चलते फिरते चक्कर आवें।
पीछे होइ फसल तैयार + पहिलें बाकी होइ सवार॥
दैकें पंजरोजा की मार + कभी कुर्की हाल करावें॥ २॥
बाकी बचै अगर जमीदार × फिर हो नालिश को तैयार॥
दैकें पंजरोजा की मार ÷ फौरन ५९ दफै लगावें॥३॥
जब हम लैबे जावें कर्ज वहां पर होत अनोंखा मर्ज।
देखो साहूकारों का तर्ज आनां रुपया व्याज लिखावें॥४॥
सब खेती की पैदावार-लेजाय जमीदार साहूकार।
आखिर हो बैठें लाचार-बच्चे भूखे रुदन मचावें॥५॥
पूरी पटवारो की मार-हम में मचवावै तकरार।
जिसके हैं पूरे अखित्यार वे काबिज चाहे जिसे बतावें॥६॥
हम तो महनत करें कमाय-बैठें रंडी भड़वे खाय।
कंजर और कलार व्यवसाय मुफतीखोरे माल उड़ावें॥७॥
राजा प्रजा साहूकार-सब के हम हीं हैं आधार।
होके जग के पालनहार पदवी हाय गंमार की पावें॥८॥

रसीया नं० ८ ॥ चरखा लैदै मोय ॥

हा हा! खाऊँ बलम तिहारे अब कें चरखा लैदै मोय॥ टेक॥
ठाले में मैं चरखा कातूं-लाख कहौ मैं ऐक न मानूं।
तू नहिं लावै तो मैं लाऊं-जहां पै बिकतौ होय॥१॥
लेंहेंगा मैं देशी पहनूँगी-गाढ़े की चादर ओढ़ूँगी।
विदेशी चूल्हे में डारूंगी-सफा सुनाय दऊँ तोय॥२॥

देशी तानो देशी बानों-इस बीस को म नहीं जानों।
बिलायती को करूं रवानों-गाढ़ चहिये मोय ॥
मखमल सलमल जो तू लायौ + फेरूंगी खरीदौ ख्वरदायो।
तीव जो काहूनें बहकायो-तासों झगड़ो होय ॥४॥
स्वराज्य गांधी नें दिल बायौ-चर्खे को उपदेश सुनायौ ॥
चर्खे में स्वराज्य बतायौ-चर्खा वन्दन होय ॥५॥
रसीया-प्रीतम चलूं तुम्हारे संग जंग में पकडूंगी तलवार।
भारत को आबाद करूंगी-नहीं जेल से बलम डरूंगी ॥
मारूंगी और नहीं मरूंगी-करूं नमक तैयार ॥१॥
चरखे की में तोप बनाऊँ-बना सूत के गोले चला
मानचेस्टर के किले को ढाऊं पाऊँ फते भरतार ॥२॥
गांधी जी का हुक्म बजाऊँ-घर २ में उपदेश सुनाऊँ ॥
अपनी बहिनों को समझाऊँ- करूँ खूब प्रचार ॥३॥

रसीया नं० १० ॥ धारौ खादी जी ॥ मारवाड़ी चाल ॥

छांड़ बिदेशी बसतर सब ला धारौ खादी जी ॥ टेक ॥
खादी धारौ जो अजी हां धारौ खादी जी।
ई खादी में लाभ घणो छै भायां रोया पेट भरै छै ॥
सभी कुटुम्बी नियम पूर्वक ईनें धारौ जी ॥१॥
ऊँ थ्याला में शीली रह वैश्या लामें ताती जी ॥
जियां चाहे जाहे जहां वयाँ रहै छै: थाँकी खादी जी ॥ २॥
दूजो कपड़ो थोड़ो चोले ज्यादा खादी जी।
धोती फाढयां पोछई का तौल्या कर ल्योजी ॥३॥
जिने पहरतों पुरखाँ मरगया वो छै: खादी जी।
फेरि बतावो क्यूं नहि पहिरौ टोटौ काई जी ॥४॥
आप बणांवो बीन पहिरो दूजां ऊपर मतिना रहिवो।
गांधी जी की ओढो कहिवो पहिरो खादी जी ॥५॥
रेजी ही है ऐसो कपड़ो जींक लागे जी।
पगड़ी थामें बांग बुरी अब डालो चोखी जी ॥६॥
ऊँ कपड़ा में चरबी लागे लागे मांडी जी।
बिकल होइ कर गोरा पहिरें थांकी खादी जी ॥७॥

रसीया नं० १० ॥ मेलबिन चक्कर खाती है ॥

भाईयो आजादी की गेंद मल बिन चक्कर खाती है।
बहुत दिना से पड़ी देश में ठोकर खाती है॥
मेल संग छूट गया यह फूट समाती है ॥१॥
जो कोई जिकर मेल का लावें नफरत आती है।
बिना मेल सब खेल बिगड़ गये इज्जत जाती है ॥२॥
वीर खिलाड़ी बढ़े समर में करि करी छाती है।
सहें वार पर वार गेंद पै जानिऊ जाती है ॥३॥
माता बहिनों की जो हालत मोपै कही न जाती है।
केस पकड़ि कें गईं घसीटी हैरत आती है ॥४॥
सूरज चन्द्रवंश के बीरो शर्म न तुमको आती है॥
(निर्भय) होकें मेल करौ नहीं बाजू जाती है ॥५॥
नहिं शेष पीछे को कदम हटाऊँ-नहि माता का दूध लजाऊँ।
रजपूती का हुनर दिखाऊँ-कसि पांचौ हतियार ॥४॥
गाड़े के सब वस्त्र वनाओ-सारी पबलिक को पहनाओ-।
सुलह करेंगे तब परदेशी करूं सूत तैयार ॥५॥

रसी नं० ११ ॥ फते न पाओगे ॥

करि कें गान्धी जी से बैर यार तुम फते न पाओगे ॥टेक॥
नये २ आर्डीनेन्स बनादो, चाहे अमन सभा जुरवा दो।
सोरों में गोली चलवा दो, चाहे वाह जरार लुटा दो॥
पर सत्याग्रह की बिकट मार है बचन न पाओगे ॥१॥
अखबारों को बन्द करा दो, चाहे बच्चों को पिटवा दो।
मा बहिनों को कैद करादो, राजपाल चाहे मरवा दो।
इन सब पापों का जगदीश्वर से बदला पाओगे ॥२॥
सोलापुर वीरान करादो, पेशावर में गोली चलवादो।
निरदोषों के सर तुड़वा दो, मार सल्ला घर २ करवा दो॥
पर जब स्वराज्य भारत में होगा तब कहां जाओगे ॥३॥
छै महीना की चाहे जेल करादो, घर घूरे नीलाम करा दो॥
भूके मरें किसान मिटादो, जितना बल हो सभी लगा दो॥
पर पोखपाल कहें अब भारत से जल्दी जाओगे ।४।